हरी दूब का सपना

❑ नंद भारद्वाज

विद्यालय और शिक्षक अपने समाज और परिवेश से अलग-थलग नहीं रह सकते। अगर समाज और परिवेश में कुछ अशुभ घटित हो रहा है तो इसकी काली छाया से विद्यालय और शिक्षक बचेंगे नहीं । और अशुभ घटनाएं मनुष्य के भीतरी संसार की मूल्यवान चीजों का क्षरण कर रही हों तो शिक्षक और बच्चों के रागात्मक संबंधों में भी दरार पैदा होगी । ऐसी स्थिति में एक समर्पित और संवेदनशील शिक्षक को अपने 'सपने' के लिए दोहरी चुनौती से जूझना होता है । क्या इस कविता का यह अभिप्राय हो सकता है ?

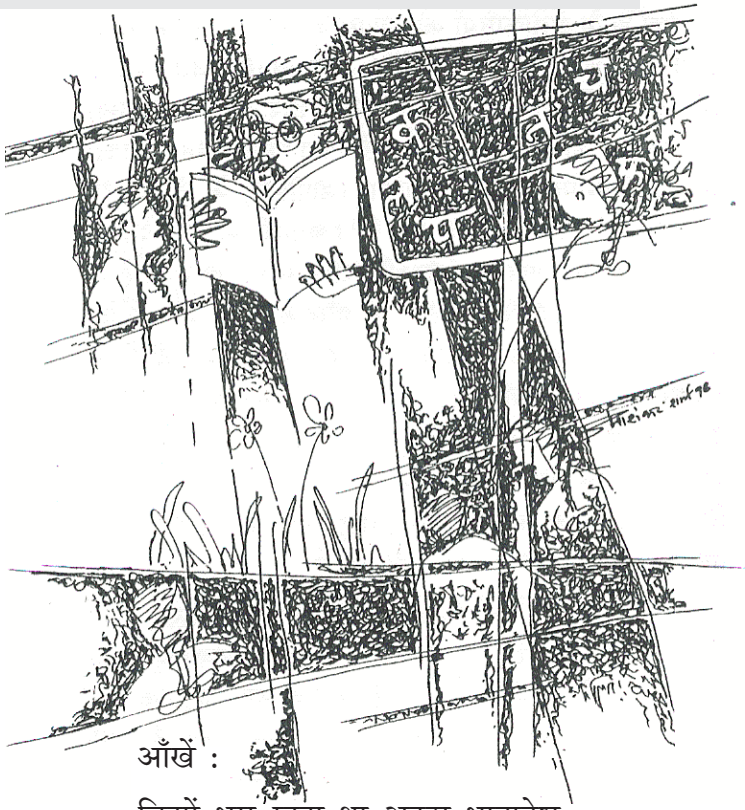

कितने भाव विभोर होकर पढ़ाया करते थे
मास्टर लज्जाराम

कितनी आस्था से
डूब जाया करते थे किताबी दृश्यों में,
एक अनाम सात्विक बोझ के नीचे
छुपा रहता था उनका दैनिक संताप
और मासूम इच्छाओं पर हावी रहती थी
एक आदमकद काली परछाई

ब्लैक बोर्ड पर अटके रहते थे
कुछ टूटे फूटे शब्द
धुंधले पड़ते रंगों के बीच
वे अक्सर याद किया करते थे
एक सुनहरे देश का सपना!

बच्चे मुंह बाए ताकते रहते
उनके अस्फुट शब्दों से बनते आकार
और सहम जाया करते थे
गड्ढों में धंसती आंखों से,
आँखें :
जिनमें भरा रहता था अनूठा भावावेश
छिटक पड़ते थे अधूरे आश्वासन
बरबस कांपते होंठों से -
और हंसते-हंसते
बेहद उदास हो जाया करते थे अनायास

हर बार अधूरा छूट जाता था
हरी दूब का सपना ! ◆